International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-06-2023, Accepted: 27-06-2023, Published: 13-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 18-20

हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता पर निर्मला पुतुल का योगदान

अनीष कुमार साकेत
शोधार्थी, हिंदी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
दुनिया भर में आदिवासी समाजों ने अपनी लड़ाइयाँ अकेले लड़ी हैं, लेकिन मुख्यधारा के क्रांतिकारी साहित्यों ने भी उनके संघर्षों को मानवीय भावना के साथ चित्रित किया है। यह प्रश्न उठता है कि किसी को उनकी चिंता क्यों नहीं है? यह समुदाय आज भी हाशिये पर की जिंदगी जीने के लिए क्यों मजबूर है? यदि साहित्य का उद्देश्य मनुष्य और मनुष्यता नहीं है, तो हिंदी साहित्य को आदिवासी समाज के बिना क्यों प्रस्तुत किया जाए? हिन्दी साहित्य में निर्मला पुतुल की कविताएं सवाल उठाती हैं और अन्याय के खिलाफ ललकारती हैं। वह हर पाठक को विचार करने के लिए मजबूर करती है। इन कविताओं में स्वानुभूति का दर्द है। वह शब्दों को ऐसे फेंकती है कि पाठक समाज रूपी नगाड़े पर गिरकर गूँजने लगते हैं स निर्मला पुतुल की कविताएँ बेहतर भविष्य की उम्मीदों और आदिवासियों की दुःखद हालत का चित्रण करती हैं। परेशानियों और चुनौतियों के बावजूद उनका चेहरा आशावादी है। निर्मला पुतुल की कविताएँ आदिवासी लोगों की भावनाओ को चित्रित करती हैं, जो दुनिया को बेहतर और खुशहाल बनाना चाहती है। जो हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता को पहचानने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

मूल शब्दः आदिवासी साहित्य, आदिवासी अस्मिता, हिन्दी साहित्य, पूर्ववर्ती कविताएँ, उदारीकरण और वैश्वीकरण, आदिवासी उन्मूलन

आज आदिवासी साहित्य हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वह हिंदी साहित्यिक जगत का विस्तृत चित्रण करता है। आदिवासी कविता में आदिवासी लोगों की परेशानियों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। इसलिए आदिवासी कविता को समकालीन हिन्दी कविता का प्रमुख स्वर माना जाता है। आज कविता–कर्म के क्षेत्र में कई आदिवासी कवि एवं कवित्री सक्रिय हैं, जिनमें निर्मला पुतुल भी शामिल हैं और बहुत से गैर आदिवासी कवि भी आदिवासी कविता को विकसित करने में पूरी तरह से सहयोग कर रहे हैं। स्त्री–विमर्श और दलित–विमर्श ने हिंदी साहित्य विमर्श से आगे बढ़ने की कोशिश की है, और हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श सबसे नवीन विमर्श है। इसका मतलब यह नहीं कि हिंदी में पहले से ही आदिवासियों के जीवन पर लेख लिखे गए हैं। लेकिन पिछले 25 वर्षों में उदारीकरण और वैश्वीकरण ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हस्तक्षेप को बढ़ाया, जो आदिवासियों के जीवन में संघर्षों को जन्म दिया, जिससे उनके पारंपरिक जल, जंगल और जमीन अधिकारों का अतिक्रमण हुआ। इससे आदिवासियों के सामने अस्तित्व और अस्मिता के कठिन प्रश्न खड़े हो गए हैं, जिसमें उनका अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है अगर वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को प्राथमिकता देते हैंसध्यातव्य है, कि यूनेस्को ने भारत में 196 आदिवासी भाषाओं के अस्तित्व को खतरे में बताया है। यही पृष्ठभूमि है जिसमें आदिवासियों की अस्मितागत और अस्तित्वगत बेचैनी ने आदिवासी विमर्श की संभावनाओं को जन्म दिया। इसके परिणामस्वरूप, आदिवासियों ने ही दलितों से प्रेरणा लेकर आदिवासियों की समस्याओं पर लेखन करने की कोशिश की है

अध्ययन के उद्देश्य

1. आदिवासी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों की पहचान कर सकेंगे।
2. समकालीन हिन्दी कविता के विकास में निर्मला पुतुल का योगदान जान सकेंगे।
3. आदिवासी समस्याओं एवं चुनौतियों की जानकारी ले पाएँगे।
4. आदिवासी अस्मिता को पुराने समाज से अलग करने की बजाय शोषित और उत्पीड़ित वर्गों और शोषक वर्गों के बीच चल रहे पारंपरिक संघर्ष की जानकारी ले पाएँगे।
5. आदिवासी विमर्श और संघर्ष को एक बड़े संघर्ष के हिस्से के रूप में पहचान कर सकेंगे।

हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता

हिंदी में अस्मितावादी विमर्शों में आदिवासी लेखन सबसे नवीन है। आज, वर्षों से हाशिए पर रखे गए आदिवासी समुदाय को साहित्य में स्थान मिल रहा है, और इससे भी अच्छा यह है कि खुद आदिवासी लोगों ने इस दिशा में पहल की है। इस दृष्टि से समकालीन कवि अपनी कविताओं में आदिवासियों के जीवन, परिस्थितियों, संघर्षों, आकांक्षाओं और सपनों को व्यक्त करते हैं। यह गीत या कविता के माध्यम से हमारे सामने आना महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रारंभिक और अधिकांश आदिवासी साहित्य वाचिक परम्परा से जुड़ा हुआ था। इसलिए आदिवासी साहित्य की विधाओं में 'कविता' सबसे महत्वपूर्ण विधा रही है। इनमें आदिवासी लोगों के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन संघर्षों की अभिव्यक्ति मिली है। इनमें विस्थापन, महिलाओं के जीवन–संघर्ष, अशिक्षा, अभाव और गरीबी सहित अनेक सामाजिक विद्रोहों का महत्वपूर्ण स्थान है।

हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता पर निर्मला पुतुल का प्रभाव एवं योगदान

"आदिवासी साहित्य" का मतलब है कि साहित्य जिसमें आदिवासियों का जीवन, समाज और दृष्टिकोण व्यक्त किया गया हो। आदिवासी साहित्य तीन प्रकार का है, पहला गैर–आदिवासी लेखकों द्वारा आदिवासी विषयों पर लिखा गया साहित्य, दूसरा खुद आदिवासी लेखकों द्वारा लिखा गया साहित्य और तीसरा, आदिवासी दर्शन को व्यक्त करने वाला साहित्य। आदिवासी लेखकों, खासकर झारखंड के लेखकों ने पिछले दो दशक में हिन्दी साहित्य में अपनी जगह बनाई है। आज आदिवासी कलम की धार स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर तक प्रभावी हो गई है। झारखंड की संथाली कवित्री निर्मला पुतुल का

सामाजिक–राजनीतिक विश्लेषण में महत्वपूर्ण योगदान है। निर्मला पुतुल ने पत्रकारिता में विवेचना, साक्षात्कार या रिपोर्ताज की शैली में अपने संवाद को प्रभावी बनाया है। उनकी चिंताएँ और सपने अपने देश और दुनिया की बेहतरी के लिए अपने परिवेश तक सीमित हैं। क्योंकि वे अपने वर्ग, समाज, राजनीति और संस्कृति से बाहर की दुनिया के मुद्दों के बारे में खामोश रहते हैं। जब आदिवासी विमर्श को साहित्यिक लेखन के माध्यम से देखा जाए, तो आदिवासी रचनाशीलता मुख्य रूप से कविता, कहानी, उपन्यास और संस्मरण में दिखाई देती है।

झारखंड की संथाली कवित्री निर्मला पुतुल ने व्यंग्य और आलोचना लेखन के माध्यम से हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता में अपना योगदान दिखाया है। हिन्दी साहित्य में निर्मला पुतुल पहला नाम है। निर्मला पुतुल का दलित साहित्य के विकास में योगदान हो सकता है, जो आदिवासी कविता के विकास से जुड़ा हुआ है। निर्मला पुतुल को 2004 में प्रकाशित दो कविता संग्रहों, अपने घर की तलाश में (रमणिका फाउण्डेशन) और नगाड़े की तरह बजते शब्द (भारतीय ज्ञानपीठ) ने उसे एक प्रमुख आदिवासी कवयित्री के रूप में हिन्दी साहित्य में स्थापित किया। हिन्दी समाज ने निर्मला पुतुल की कविताओं के माध्यम से पहली बार आदिवासी जीवन की कहानियों को पढ़ा। पहली बार पूरी तरह से आदिवासी समाज के जीवन, संस्कृति, समस्याओं और चुनौतियों को दिखाता है। यह भी कहा जाता है कि निर्मला पुतुल की कविताओं ने आदिवासियत को हिन्दी रचना और अनुभव जगत में पहली बार उजागर किया था।

हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता में निर्मला पुतुल का प्रतिरोध का स्वर और उनकी कविताओं का महत्वपूर्ण योगदान निम्नलिखित हैः–

निर्मला पुतुल की कला में प्रतिरोध के कई रूप देखने को मिलते हैं। विरोध का स्वर कहीं क्रूर होता है, तो कहीं शांत होता है। कभी–कभी आदिवासी क्रोध, जो सदियों की पीड़ा से उत्पन्न हुआ है, कविता की सीमा पार करता भी प्रतीत होता है। निर्मला पुतुल कहते हैं कि आदिवासी समाज भी मुख्यधारा के समाज की तरह महत्वपूर्ण है, लेकिन उन्हें हमेशा हाशिए पर रहना पड़ा। उनकी कविताओं में सदियों से चली आ रही इस शोषणात्मक व्यवस्था का विरोध दिखाई देता है। इससे प्रेरित होकर वे निम्नलिखित लेख लिखती हैंः–

"जमीन की परतें तोड़कर,
फूटते अंकुर की तरह स
फूटेगा एक दिन हमारा असन्तोष,
और भडक उठेगी आग।" (वही, पृ. 84)

निर्मला पुतुल शोषण के संबंधों को जन्म देने वाली व्यवस्था का अंत चाहती हैं। वे चाहती हैं कि आदिवासी भी समाज में समान स्थान और अवसर पाए। आदिवासी लोगों का श्रम शोषण खत्म कर, उनका सही हक दिया जाए। आदिवासी संस्कृति को अपेक्षाकृत कम समझकर उसे बदनाम नहीं करना चाहिए। वे अपने सन्थाली भाइयों से कहती हैं, कि गैर आदिवासियों को पारितोषिक के लालच में अपने करतबों से खुश करने से बचें। तब वे घड़ा–उतार मनोरंजन के खिलाफ एक शीर्षक कविता लिखती हैंः–

"कर दो ऐलान कि अब नहीं होगा, कभी यह तमाशा।
अगर कुछ होगा तो, खुले मैदान में तीरन्दाजी होगी।" (वही, पृ. 64)

यह एक क्रांतिकारी कथन है। निर्मला पुतुल ने देखा कि आदिवासी कुछ पैसे या सामान्य कपड़े के लालच में जानवरों–सा करतब दिखाने को मजबूर हैं। रोजगार और आय के स्रोतों की कमी से आदिवासी लोगों का जीवन खराब होता जा रहा है। उन्हें श्रम, संसाधनों और जमीन पर एक वर्ग का अधिकार है। निर्मला पुतुल का विचार है कि उस वर्ग में असंतोष होना स्वाभाविक है। निर्मला पुतुल ने भी साहित्यिक संयम का पालन करते हुए असहनीय शोषण और अत्यंत दयनीय स्थिति में रहने वाले आदिवासी समुदाय की भावनाओं को व्यक्त किया है। वे कविता को मंच का उपयोग करती हैं। अपनी कविता में आदिवासियों की दुखद स्थिति को दिखाती हैं और उनके खिलाफ अपने लोगों को एकजुट करना चाहती हैं। तब वे निम्नलिखित लेख लिखती हैंः–

"वक्त है यह,
बहुत कुछ कहने सुनने करने और गुनने का।
कहो और पूरी ताकत से कहो, जो कहना चाहते हो तुम"। (वही, पृ.57)

वे अपनी कविताओं से साबित करती हैं कि विचारशील होने पर कोई भी बात पूरी तरह से व्यक्त नहीं की जा
सकती। बात को लोगों तक पहुँचाने और प्रभावशाली बनाने के लिए सोचना और बोलना आवश्यक है। वे आदिवासियों की समस्याओं और चुनौतियों को पूरी तरह से समझने के बाद ही ऐसा लिख पाई होंगीः–

"करूँ कैसे नहीं विरोध
विरोध की पूरी गुंजाइश के बावजूद?" (वही, पृ. 105)

निर्मला पुतुल कहती है कि प्रतिरोध के लिए पूरी ऐतिहासिकता को देखना चाहिए। तभी उस परिस्थिति के निर्माण की प्रक्रिया और उसकी वजहों से अवगत हुआ जा सकता है, जिससे विरोध को सशक्त और सृजनात्मक बनाया जा सकता है। यही कारण है कि वे कविता को सिर्फ साहित्यिक कार्य या कला कार्य नहीं मानती। कला भी आदिवासी लोगों के जीवन का एक हिस्सा है। इसलिए वे कविता को सामाजिक कार्य मानती हैं। तब वे इस विषय पर एक लेख लिखती हैंः–

में कविता नहीं,
शब्दों में खुद को रचते देखती हूँ।
अपनी काया से बाहर खड़ी होकर,
अपना होगा। (वही, पृ.8)

यहाँ कविता सिर्फ एक सामाजिक जिम्मेदारी है, न कि कलाकृती। यहाँ, निर्मला पुतुल शब्दों के माध्यम से एक स्त्री और आदिवासी की दुनिया दिखाती है, जो कठिन और अभावग्रस्त है। वह कविता में जितना वास्तविक है उतना ही वास्तविक जीवन में भी है। कविता, व्यक्तिगत कार्य होते हुए भी समुदाय को एक वैश्विक दृष्टिकोण देती है। विभिन्न पात्रों में अपने आप को बाँधते हुए देखना सामाजिक जिम्मेदारी का गंभीर बोध का संकेत है। निर्मला पुतुल की कविता में आदिवासियों की लड़ाई सृजनात्मक रूप से चित्रित की गई है।

उपसंहार/निष्कर्ष

स्पष्ट है कि ज़ातिगत भेदभाव, वर्णव्यवस्था, बाहरी आक्रमण, अंग्रजों और आज के सभ्य कहे जाने वाले लोगों ने आदिवासियों को सदियों से दूर–दराज पहाड़ों और जंगलों में खदेड़ा है।। उन्हें अज्ञानता और पिछड़ेपन के कारण सताया गया है। यह समाज सदियों से अक्षरज्ञान की कमी के कारण मुख्यधारा से दूर रहा है। उनका साहित्य और लोककला सदियों से मौखिक रूप

में रहे हैं, जिसकी वजह से उनकी भाषा के लिए लिपि विकसित नहीं हुई। यही कारण है कि आदिवासी लेखकों का साहित्य गैर–आदिवासी लेखकों की तुलना में साहित्य जगत में कम पाया जाता है। आदिवासियों की रचनाओं का महत्व इस बात में है कि इसने मुख्यधारा के द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत आदिवासी समाज और उनके जीवन से जुड़े व्यापक समाज को परिचित करवाने की कोशिश की, भले ही आज उनका मूल्यांकन पाठकों और आलोचकों को निराश करता हो और कलात्मक बारीकियों के दृष्टिकोण से उनका मूल्यांकन निराश करता हो। निर्मला पुतुल एक कवित्री हैं जो समकालीन हिन्दी कविता के परिदृश्य को बढ़ाती हैं। उनकी कविताएँ आदिवासी समाज का जीवंत चित्रण करती हैं। निर्मला पुतुल की कविताओं में अक्सर आज के आदिवासी समाज के सामने खड़ी चुनौतियों का चित्रण किया गया है। जो हिंदी समकालीन साहित्य में आदिवासी अस्मिता की पहचान करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ.73 ।
2. निर्मला पुतुल, अपने घर की तलाश में, रमणिका फाउण्डेशन, नई दिल्ली, पृ.46 ।
3. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. 84, पृ. 57,पृ. 105, पृ. 8, ।
4. आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी डॉ. रमणिका गुप्ता ।
5. आदिवासी साहित्य विमर्श : चुनौतियाँ और संभावनाएँ : गंगा सहाय मीना स
6. (कुछ मत कहो सजोनी किस्कू! (कविता), नगाड़े की तरह बजते शब्द दृ निर्मला पुतुल)
7. कुमारडॉ॰ अभिमन्यु. (2023)। "अस्मिता–बोध में हिंदी एनिमेटेड आत्मकथाएँ।" उन्नत शैक्षणिक अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, व्यापक प्रकाशन, 5(1), 32–34।
8. मौर्य, डॉ॰ के. (2017)। "दलित निजी एवं साहित्य।" अनुसन्धानः एक बहुविषयक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (हिन्दी में), उन्नत अनुसंधान प्रकाशन, 2(1), 25–38 ।
9. जाधवविनोद विठ्ठलराव. (2021)। "आदिवासी स्त्री जीवन।" अंतरविषयक अध्ययन के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, 8(65), 15095–15099।
10. सिंहडॉ. रामाश्रय. (2022)। "अस्मिता और स्त्री का प्रश्न।" प्रैक्सिस इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड लिटरेचर, रिसर्च वॉकर्स, 16–21।
11. सोनोने. गुणवन्त. (2017)। "भारत की युवा महिलाएँ एवं वर्तमान चुनौतियाँ।" अंतःविषय अध्ययन के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, 4(36)।